S- VI
comma. Psy
DSE - IV

CHALLENGES OF COMMUNITY MENTAL HEALTH PROGRAM IN INDIA

भारत में सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की चुनौतियां

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार करीब 7.5% भारतीय किसी न किसी रूप से मानसिक बिमारियों से ग्रसित है साथ ही WHO ने यह भी अनुमान लगाया कि आनेवाले कुछ ही वर्षों में भारत की लगभग 20% आबादी मानसिक विमारी से किसी-किसी रूप में ग्रसित हो जाएगी। मानसिक रोगियों की संख्या काफी अधिक होने के बावजूद भी भारत में इसे अभी तक एक रोग के रूप में पहचान नहीं मिल पायी है और आज भी मानसिक स्वास्थ्य की पूर्णतः उपेक्षा की जाती है और इसे कल्पित काल्पनिक माना जाता है। जबकि सच्चाई तो यह है कि जिस प्रकार शारीरिक रोग हमारे लिए हानीकारक है उसी प्रकार मानसिक रोग भी हानीकारक है। मानसिक स्वास्थ्य में हमारा भावनात्मक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण शामील होता है। यह हमारे सोंचने समझने महसूस करने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है।

WHO ने यह भी दावा किया कि अवसाद Depression पूरे विश्व की दूसरी बड़ी समस्या है और अध्ययन यह भी सिद्ध कर चुके हैं कि हृदय रोग का प्रमुख कारण अवसाद ही है। इतना ही नहीं मानसिक विमारी कई सामाजिक समस्याओं जैसे - बेरोजगारी, गरीबी और चोरी आदि को जन्म देती है।

भारत में यदि वर्तमान परिदृश्य की चर्चा की जाए तो स्पष्ट होगा कि - WHO के अनुसार भारत में भी मानसिक रोगियों की संख्या काफी अधिक है और भारत में 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों के मृत्यु का सबसे बड़ा कारण आत्म हत्या है और जिसके संपोषक के रूप काफी हद तक मानसिक विमारी ही कार्य करता है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य कर्मियों की भी काफी कमी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार

Scanned with CamScanner

2011 में भारत में मानसिक विकार से पीड़ित प्रत्येक 100,000 रोगियों के लिए 0.30 मनोचिकित्सक और 0.07 मनोवैज्ञानिक थे। 2011 के ही जनगणना से पता चलता है कि करीब 1.5 मिलियन लोगों में बौद्धिक अक्षमता और करीब 722826 लोगों में मनोसामाजिक विकलांगता मौजूद है। इसके बावजूद भी भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर किया जाने वाला व्यय कुल सरकारी स्वास्थ्य व्यय का मात्र 1.3% ही है जहां मानसिक रोगों से ग्रसित करीब 7.62% लोग बेरोजगार हैं। भारत में मानसिक रूप से बीमार लोगों के पास या तो देखभाल की आवश्यक सेवाएं उपलब्ध नहीं है और यदि है भी तो उसकी गुणवत्ता भी ठीक नहीं है।

इन उपयुक्त विवरणों के बावजूद हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी अनेकों चुनौतियां हैं जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

1. जहां सबसे बड़ी चुनौती यह है कि चाहे जागरूकता की कमी और अज्ञानतावश लोगों द्वारा किसी भी प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य विकार से पीड़ित को पागल ही माना जाता है एवं उनके साथ उनके इच्छा के विरुद्ध जानवरों सा व्यवहार किया जाता है।

2. आंकड़े बताते हैं कि भारत में महिलाओं की आत्महत्या दर पुरुषों से अधिक है जिसका मुख्य कारण घरेलू हिंसा कम उम्र में विवाह युवा मातृत्व और अन्य लोगों पर आर्थिक निर्भरता आदी को माना जाता है। महिलाएं मानसिक स्वास्थ्य दृष्टि से भी पुरुषों की अपेक्षा काफी संवेदनशील होती है परंतु हमारे समाज में यह मुद्दा सामान्य माना जाता है और इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता।

Scanned with CamScanner

3. भारत में मानसिक स्वास्थ्य संबन्धी विकारों से जुड़ी सामाजिक भ्रांतियां भी एक बड़ी चुनौति है उदाहरण के लिए भारत मे 2017 तक आत्म हत्या को अपराध माना जाता था और IPC के तहत इसके लिए अधिकतम एक वर्ष जेल की सजा भी थी। लेकिन कई मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि अवसाद तनाव और चिन्ता आत्म हत्या के प्रमुख कारण हो सकते है।

4. एक प्रमुख चुनौति यह भी है कि भारत के पास स्वास्थ्य संबन्धी मुद्दों को संबोधित करने के लिए आवश्यक क्षमताओं की भी कमी है। आंकड़े बताते है कि 2017 मे भारत की विशाल जनसंख्या हेतु मात्र 5000 मनोचिकित्सक और 2000 से भी कम मनोवैज्ञानिक थे

5. मानसिक स्वास्थ्य संबन्धी मुद्दों को ठीक से संबोधित नही किये जाने के कारण काफी आर्थिक क्षति हो रही है। इससे न केवल देश की मानव पूंजी का नुकसान हो रहा है बल्कि प्रभावित व्यक्ति की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ जाती है। क्योंकि इस रोग के इलाज की अपेक्षाकृत जो भी सुविधाए उपलब्ध है वे काफी महंगी है।

6. WHO के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य विकारों का सबसे अधिक प्रभाव युवाओं पर पड़ता है चूंकी भारत की अधिकांश जनसंख्या युवा है इसलिए यह एक बड़ी चुनौति के रूप मे उभरा है।

7. यदि कोई व्यक्ति एक बार किसी मानसिक रोग से ग्रसित हो जाता है तो जीवन भर उसे इस तमगे के साथ जीना पड़ता है चाहे वह इस रोग से मुक्ति मुक्ति ही क्यों न पा ले। भारत मे इस प्रकार के

लोगों के लिए समाज की मुख्य धारा से जुड़ना काफी चुनौतिपूर्ण होता है।

Q. मानसिक विमारों और लक्षणों के संबन्ध में जागरूकता की कमी के कारण अक्सर रोगी और उसके समाज के अन्य लोगों के बीच एक अंतर उत्पन्न हो जाता है और रोगी को सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है जिसके कारण उसकी स्थिति और खराब हो सकती है।

इसप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भारत में मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने से संबन्धित अनेकों समस्याएं एवं चुनौतियां हैं एसे में आवश्यक है कि इनसे निपटने के लिए उपयुक्त क्षमताओं का विकास किया जाए और संसाधनों की वृद्धि की जाए।

31/05/2020

Scanned with CamScanner